विद्यालङ्कार (बी०ए० संस्कृत ऑनर्स)

संस्कृत विषय के लिये CBCS आधृत विस्तृत पाठ्यक्रम

Generic Elective (GE) Course

सत्र- तृतीय Semester –3

मौलिक-वैकल्पिक-विषय	**भारतीय पुरालेख एवं शिलालेख**	**पूर्णाङ्क -100**
Generic Elective (GE)	**Indian Epigraphy & Paleography**	**सत्रान्त परीक्षा -70**
Paper–HSA– G312		**आन्तरिक परीक्षा-30**
		सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)

खण्ड-क (Section-1) प्रमुख शिलालेखों का अध्ययन

खण्ड-ख (Section-2) भारतीय पुरालेख शास्त्र

खण्ड-ग (Section -3) ब्राह्मीलिपि और भारतीय पुरालेख शास्त्र के अध्ययन का इतिहास

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पत्र का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत में लिखी गई पुरालेख सम्बन्धी यात्रा से परिचित कराना है। पुरातत्त्व अकेले ऐसे स्रोत हैं, जो अपने समय की अर्थव्यवस्था, भूगोल, राजनीति और समाज की सीधी-सीधी जानकारी देते हैं। यह पत्र छात्रों को सहायता करता है कि वे संस्कृत की विभिन्न शैलियों से परिचित हो सकें।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र संस्कृत में लिखे गए प्राचीन अभिलेखों से परिचित हो सकता है।
2. इतिहास एवं पुरातत्त्व में विशेष अभिरुचि रखने वाले छात्रों को इस पत्र से अत्यधिक लाभ सम्भव है।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड-क (Section -1)

प्रमुख शिलालेखों का अध्ययन

घटक-क (Unit–1) **(क)** अशोक के राजपत्र और नैतिक मूल्य : (१) समाज (२) सुश्रूषा (३) चिकित्सा (४)

(ख) अशोक के अनुसार धम्म

(ग) अशोक के राजपत्र, प्राशासनिक नौकरशाह : (१) रज्जुक (२) युक्त (३) धर्म –महामात्र

(घ) लोक कल्याणकारी राज्य: बांधों का पुनर्निर्माण, रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेखों में मति सचिव एवं कर्म सचिव

घटक-ख (Unit–2) **(१)** लौह स्तम्भ अभिलेख :

(क) ईरान स्तम्भ अभिलेख और समुद्रगुप्त की स्थिति

(ख) चन्द्रगुप्तकामेहरौली लौह स्तम्भ अभिलेख

(२) समुद्रगुप्त की मृत्यु के बाद अधीनस्थ शासकों की प्रतिक्रया

(३) शक्तिशाली चन्द्रगुप्त द्वितीय

(४) चह्वाण शासक का प्रभाव, दिल्ली टोपरा स्तम्भ अभिलेख में प्रदर्शित वीसलदेव

खण्ड-ख (Section -2)

भारतीय पुरालेख शास्त्र

घटक-क (Unit–1) **(क)** भारत में प्राचीनकालीन लेखन :

(१) विदेशी विद्वानों के कथन
(२) साहित्यिक प्रमाण
(३) भारतीय पुरालेख शास्त्रों के अध्ययन

(ख) अभिलेखों के अध्ययन का महत्त्व :

(१) भौगोलिक विवरण
(२) ऐतिहासिक प्रमाण
(३) समाज
(४) धर्म
(५) साहित्य
(६) आर्थिक स्थिति
(७) प्रशासन

घटक (Unit–2) (क) अभिलेखों के प्रकार :प्रशस्ति, धार्मिक, दान, अनुदान

(ख) लेखन सामग्री : चट्टानें, स्तम्भ, धातुपात्र, मूर्ति, लेखनी, ब्रश, छैनी, शलाका, रंग, चित्रकारी इत्यादि

खण्ड-ग (Section-3)

ब्राह्मीलिपि और भारतीय पुरालेख शास्त्र के अध्ययन का इतिहास

घटक (Unit–1) (क) ब्राह्मी लिपि का उद्भव :

(१) विदेशी उद्भव – ग्रीक, फोनेनिशियन
(२) भारतीय उद्भव - दक्षिण भारतीयों के सिद्धान्त और आर्यन् सिद्धान्त
(ख) ७०० ईसा पर्यंत लिपियों का विकास
(ग) ब्राह्मी लिपि के प्रकार

घटक-ख (Unit–2) (क) भारतीय अभिलेखों के अध्ययन का इतिहास
(ख) पुरालेखों के प्रति योगदान, जी.एच. ओझा, फ्लीट, प्रिन्सेप, डी.सी. सरकार, कनिंघम, बुह्लर
(ग) विक्रम, शक, गुप्त तथा हर्ष युग में काल निर्धारण की विधियां :

घटक-ग (Unit–3) (क) आचार नीति :कर्म एवं पुनर्जन्म का सिद्धान्त, मुक्ति

सन्दर्भ-ग्रन्थ :

1. Bhandarkar, D.R., Aśoka (Hindi)
2. Buhler, G, On the origin of the Indian alphabet & numerals.
3. Dani, A. H, Indian Paleography
4. Ojha, G. H, Bhāratīya Prāćīna Lipimāla (Hindi)
5. Pandey, R.B, Aśoka ke Abhilekha (Hindi), Bhāratīya Purālipi (Hindi)
6. Rana, S.S., Bhāratīya Abhilekha
7. Sircar, D.C., Indian Epigraphy
8. K.D. Bajpeyi (trans.), Indian Epigraphy, - Bhāratīya Purālipi)
9. Select Inscriptions (Part - I)
10. Upadhyay, V., Prāćīna Bhāratīya Abhilekha (Hindi)
11. Thapar, Romila, Asoka thathā Maurya Sāmrājya Ka Patana (Hindi)